माध्यमिक अंग्रेज़ी

TESS India

समझने के लिए पढ़ने को प्रोत्साहन

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

The Open University

UKaid from the British people

http://creativecommons.org/licenses/

TESS-India (स्कूल–आधारित अनुसमर्थन के द्वारा अध्यापक शिक्षा) का उद्देश्य छात्र–केंद्रित, सहभागी संकल्पना के विकास के लिए शिक्षकों की सहायता के लिए मुक्त शिक्षा संसाधनों (OERs) के माध्यम से भारत में प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण पद्धति में सुधार लाना। TESS-India OERs शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। वे शिक्षकों के लिए अपनी कक्षाओं में अपने छात्रों के साथ प्रयोग करने के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं, जिनमें यह दर्शाने वाले वृत्त–अध्ययन भी शामिल रहते हैं कि अन्य शिक्षकों द्वारा उस विषय को कैसे पढ़ाया गया, और उनमें शिक्षकों के लिए अपनी पाठ योजनाएँ तैयार करने के लिए तथा विषय संबंधी ज्ञान के विकास में सहायक संसाधन भी जुड़े रहते हैं।

TESS-India OERs को भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किया गया है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध हैं (http://www.tess-india.edu.in/)। OERs भाग लेने वाले प्रत्येक भारतीय राज्य के लिए उपयुक्त, कई संस्करणों में उपलब्ध हैं और उपयोगकर्ताओं को इन्हें अपनाने तथा अपनी स्थानीय जरूरतों एवं संदर्भों की पूर्ति के लिए उनका अनुकूलन करने के लिए और स्थानीयकरण करने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त–पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ निम्नलिखित आइकॉन दिया गया है: 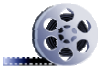 *. यह दर्शाता है कि आपको विशिष्ट शैक्षणिक थीम के लिए TESS-India के वीडियो संसाधनों को देखने में इससे मदद मिलेगी।*

TESS-India के वीडियो संसाधन भारत में विभिन्न प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में प्रमुख शैक्षणिक तकनीकों का सचित्र वर्णन करते हैं। हमें उम्मीद है कि वे आपको इसी तरह के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। इन्हें पाठ–आधारित इकाइयों के माध्यम से आपके कार्य अनुभव में इज़ाफ़ा करने और बढ़ाने के लिए रखा गया है, लेकिन अगर आप उन तक पहुँच बनाने में असमर्थ रहते हैं तो बता दें कि वे उनके साथ एकीकृत नहीं हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को TESS-India की वेबसाइट http://www.tess-india.edu.in/ पर ऑनलाइन देखा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है)। विकल्प के तौर पर, आप इन वीडियो तक सीडी या मेमोरी कार्ड द्वारा भी पहुँच बना सकते हैं।

संस्करण 2.0 SE04v1
All India - Hindi

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

जब छात्र किसी ऐसी भाषा में लिखा गया पाठ पढ़ते हैं जिसे वे सीख रहे हैं, जैसे अंग्रेजी, तब उनका ध्यान उन शब्दों या उन व्याकरण सम्बन्धी रचनाओं पर केन्द्रित रहता है जिन्हें वे नहीं समझते हैं या नहीं जानते हैं इसका मतलब यह है कि वे जो कुछ पढ़ रहे हैं जैसे किसी कहानी की घटनाएँ या लेखक के तर्क आदि तो वे उसके समग्र अर्थ पर ध्यान नहीं देते हैं:

यह इकाई आपके छात्रों द्वारा अंग्रेजी में पढ़ी जा रही विषयवस्तु के अर्थ को समझने में मदद करने के संबंध में है। खास तौर पर उनकी पाठ्यपुस्तकों के अध्याय। यह कुछ ऐसी तकनीकों का वर्णन करती है जिनका उपयोग आप अपने छात्रों द्वारा अंग्रेजी में पढ़ी जा रही विषयवस्तु को समझने में मदद करने के लिए कर सकते हैं। यह आपको दिखाती है कि कुछ ऐसी गतिविधियाँ कैसे की जायं जिन्हें छात्र पाठ को पढ़ने से पहले, के दौरान और बाद में कर सकते हैं, ताकि जो कुछ वे पढ़ रहे हैं उसके अर्थ पर ध्यान देने में उन्हें सहायता मिल सके। इकाई के अंत में, आप इन सभी तकनीकों का उपयोग करते हुए अध्याय पढ़ाने के लिए एक अध्याय योजना पाएंगे।

आप इस इकाई में क्या सीख सकते हैं

- छात्रों को अध्याय पढ़ने के लिए तैयार कैसे करें ताकि वे उसे बेहतर रूप से समझ सकें।
- छात्रों को पाठ पढ़ते समय समझने में किस प्रकार मदद करें।
- पढ़ने के बाद उनकी समझ की जाँच किस प्रकार करें।

1 छात्रों को पढ़ने के लिए तैयार करना

कई अध्यापक नए पाठ को पढ़ाते समय अनुवाद का उपयोग करते हैं, क्योंकि इससे छात्रों को अलग–अलग शब्दों को समझने में मदद मिल सकती है। तथापि, हर समय अनुवादों का उपयोग करने से कुछ हानियाँ होती हैं:

- यदि आप हमेशा अनुवाद और स्पष्टीकरण का उपयोग करते हैं, तो छात्र उतनी अंग्रेजी नहीं सुनते हैं जितनी उन्हें सुननी चाहिए। आपके छात्र कक्षा में जितनी अधिक अंग्रेजी सुनेंगे, वे उसे उतना ही बेहतर समझ कर उसका उपयोग कर सकेंगे (देखें इकाई *अपनी कक्षा में अधिक अंग्रेजी का उपयोग करना*)।
- अधिकांश भाषाओं में कई शब्दों और वाक्यांशों के सीधे अनुवाद अक्सर उपलब्ध नहीं होते हैं। यदि छात्र अंग्रेजी का उपयोग करके अंग्रेजी सीखते हैं, तो उनके अंग्रेजी में सोचने और भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से अनुभव करने और उसका उपयोग करने की अधिक संभावना होगी।
- अनुवाद और स्पष्टीकरण अपने पाठों के अर्थों को स्वयं मालूम करने में छात्रों की मदद नहीं करते हैं (देखें इकाई *'शब्दावली पढ़ाने के लिए कार्यनीतियाँ'*) यदि उनके लिए हर शब्द का अनुवाद किया जाय, तो उन्हें कक्षा के बाहर या भविष्य में अंग्रेजी पढ़ने की जरूरत पड़ने पर कठिनाई हो सकती है।

विचार के लिए रुकें

आपने अपने छात्रों को जो पिछला अध्याय पढ़ाया था उसके बारे में सोचें और इन प्रश्नों का उत्तर दें।

- अध्याय में किस प्रकार की पठन–सामग्री थी? उदाहरण के लिए, क्या वह गद्य, कहानी या कविता थी?
- क्या आपने छात्रों को वह पठन–सामग्री सस्वर पढ़कर सुनाई थी?
- आपके छात्रों ने पठन–सामग्री को कितनी अच्छी तरह से समझा?

- क्या आपने उसका अनुवाद छात्रों की स्थानीय भाषा में किया?
- क्या आपने उसका अर्थ छात्रों की स्थानीय भाषा में समझाया?

जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे समझने में आपके छात्रों की सहायता करने के लिए अन्य तकनीकों (कुछ अनुवाद और स्पष्टीकरण के साथ) का उपयोग करना आपके लिए अच्छा है।

छात्रों को अपनी पाठ्यपुस्तकों में कई अध्याय पढ़ने हैं। इनमें से कई पठन–सामग्रियाँ कठिन हैं, और उनमें जटिल शब्दावली और व्याकरण संबंधी संरचनाएं हैं। कभी–कभी पाठ्य वस्तु के शीर्षक या मूल विचार भी कठिन होते हैं, जिनमें बहुत समय पहले हुई ऐसी घटनाओं की चर्चा होती है, जो या तो बहुत समय पहले हो चुकी हैं या वे ऐसे स्थानों में होती हैं जहाँ छात्र न तो कभी गए हैं न ही कभी उन्होंने उसका नाम सुना है।

छात्र पाठ्य वस्तु और पाठ की भाषा को तब बेहतर समझ पाएंगे जब आप उन्हें पढ़ने के लिए तैयार करेंगे। छात्रों के पढ़ना शुरू करने से पहले पाठ के कुछ शब्दों, वाक्यांशों व व्याकरण संबंधी संरचनाओं को पढ़ाकर या पाठ के शीर्षक व मूल विषय पर चर्चा करके आप ऐसा कर सकते हैं।

गतिविधि 1: सत्रहवीं सदी की एक कविता, 'The Perfect Life' को पढ़ाने के तरीके का नियोजन करना

यह आपके करने की गतिविधि है; यह नियोजन गतिविधि है।

कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक से इस कविता को पढ़ें (*English: A Textbook for Class X*)। इसका नाम 'The Perfect Life' है और इसे Ben Jonson ने लिखा था।

It is not growing like a tree
In bulk doth make man better be;
Or standing long an oak, three hundred year,
To fall a log at last, dry, bald, and sere:
A lily of a day
Is fairer far in May,
Although it fall and die that night—
It was the plant and flower of light.
In small proportions we just beauties see;
And in short measures life may perfect be.

जब आप इसे पढ़ लें, तब इन प्रश्नों का उत्तर दें। हो सके तो अपने किसी सहकर्मी के साथ उन पर चर्चा करें:

- इस कविता की भाषा कक्षा 10 के छात्रों के लिए काफी कठिन है। इससे पहले कि वे कविता को पढ़ें, आप उन्हें भाषा के लिए कैसे तैयार करेंगे?
- इस कविता को सत्रहवीं शताब्दी में एक अंग्रेज कवि ने लिखा था। आप इक्कीसवीं सदी के भारतीय छात्रों को कविता के मूल विचार के लिए कैसे तैयार करेंगे?

अब इस कविता को पढ़ाने के ढंग के बारे में कुछ शिक्षकों के विचार पढ़ें, और उनकी तुलना अपने स्वयं के विचारों से करें। आपने जो कोई विचार सोचें हैं उन्हें नीचे दिये हुए स्थान पर लिखें

मैं कविता के शीर्षक को बोर्ड पर लिखूँगा, और छात्रों से अंदाजा लगाने को कहूँगा कि कविता में क्या है।

मैंने अपने छात्रों को यह कविता पढ़ाई। उनके द्वारा इसे पढ़ने से पहले, मैंने उनसे उन चीजों की एक सूची बनाने को कहा जिनसे जीवन परिपूर्ण बन सकता है। फिर हमने उनके विचारों पर चर्चा की और उन विचारों को बोर्ड पर लिखा जिन पर कक्षा में सहमति थी।

मैंने कुछ सबसे कठिन शब्द बोर्ड पर लिखे, और छात्रों से पूछा कि क्या वे उनका अर्थ जानते हैं। मैंने उन्हें वे शब्द पढ़ाए जिन्हें वे नहीं जानते थे ताकि कविता को पढ़ना अधिक आसान हो जाय।

मैंने एक ऐसी कक्षा को ध्यानपूर्वक देखा जो इस कविता का अध्ययन कर रही थी। छात्रों के कविता को पढ़ने से पहले, अध्यापक ने उन्हें एक शाहबलूत (ओक) के वृक्ष और कुमुदिनी के फूल का चित्र दिखाया, और उन्होंने उनके बीच की भिन्नताओं के बारे में बातचीत की।

आपके विचार:

वे गतिविधियाँ जिनमें आप अपने छात्रों को कुछ पढ़ने से पहले तैयार करते हैं अक्सर पठन–पूर्व गतिविधियाँ कहलाती हैं। पाठ किस बारे में होगा इस विषय में सोचने में वे छात्रों की सहायता करती हैं, जिससे उन्हें पाठ को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिलती है।

केस स्टडी 1: सुश्री गुप्ता अपनी कक्षा के साथ एक पठन–पूर्व गतिविधि करती हैं

*सुश्री गुप्ता कक्षा 10 को अंग्रेजी पढ़ाती हैं। उन्हें अपने छात्रों को Ben Jonson **की** कविता 'The Perfect Life' पढ़ानी थी। उन्हें पता था कि पाठ कठिन है, और उन्होंने सोचा कि यदि वे अपनी कक्षा को कविता पढ़ने से पहले तैयार करेंगी तो वे उसे बेहतर ढंग से समझेंगे और याद रखेंगे।*

कविता पढ़ाने से पहले, मैंने बोर्ड पर उसका शीर्षक लिखा: 'The Perfect Life'. मैंने अपने छात्रों से शीर्षक का हिंदी में अनुवाद करने को कहकर यह जाँच की कि क्या वे इसका अर्थ समझ सकते हैं। फिर मैंने उनसे पूछा: ''What makes a perfect life?'

शुरू में किसी ने भी कोई सुझाव नहीं दिया, इसलिए मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया: 'The perfect life for me would be to do no cooking!' छात्र हँसने लगे, और उनमें से एक या दो में सुझाव देने का आत्मविश्वास जागा। इससे अन्य छात्रों को भी विचार आए, और मैंने उनमें से पाँच या छह को बोर्ड पर लिखा।

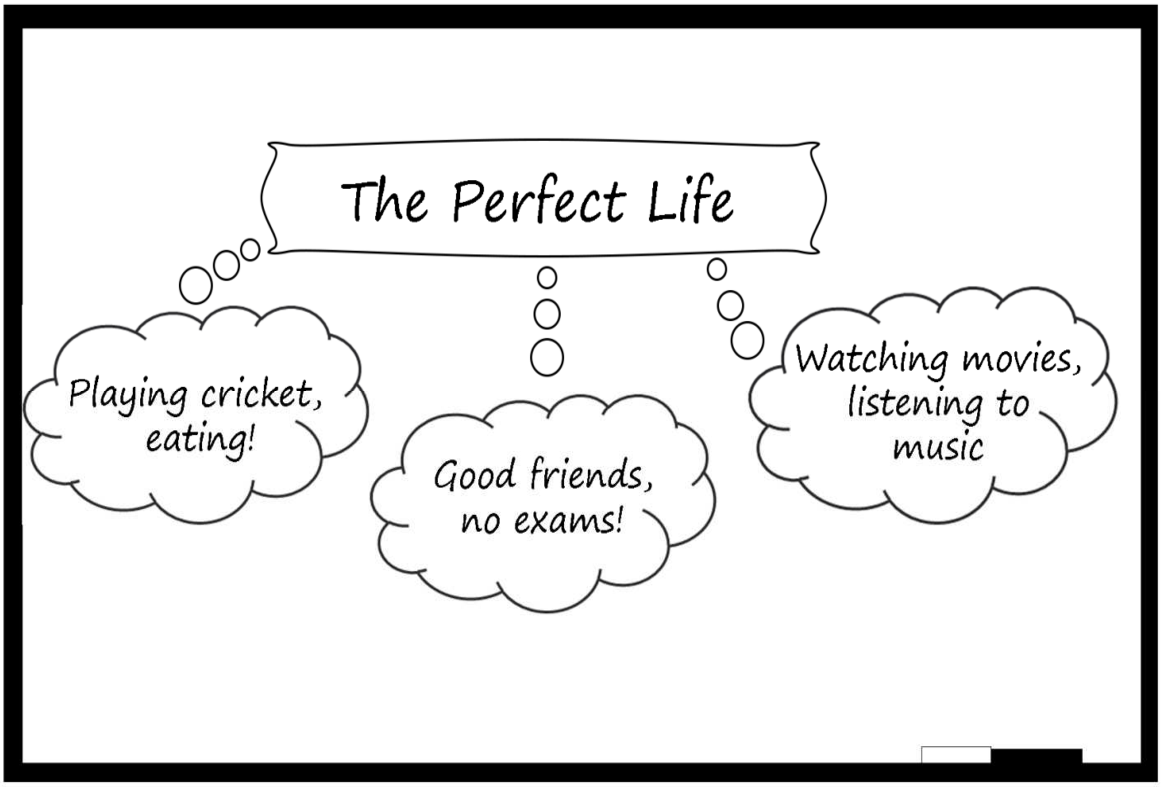

फिर मैंने हर एक को जोड़ियों में संगठित किया। मैंने हर दूसरी बेंच पर बैठे छात्रों को पीछे घूमने को कहा और अब उनके सामने बैठे सहपाठी के साथ काम करने को कहा मैंने उनसे कहा:

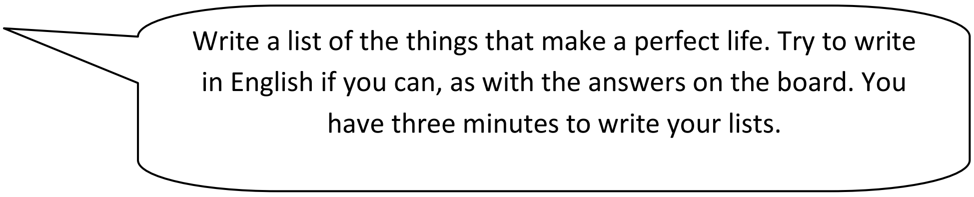

जब मेरे छात्र लिख रहे थे, तब मैंने कक्षा में घूमते हुए सुनिश्चित किया कि वे गतिविधि कर रहे हैं और यदि किसी को कुछ शब्दों के अर्थ नहीं आ रहे थे तो मैने उसकी सहायता की।

कुछ मिनटों के बाद मैंने हर एक से लिखना बंद करने को कहा और बोर्ड पर निम्नलिखित वाक्य लिखा: 'The perfect life is like a …'

मैंने बोर्ड पर लिखा वाक्य पढ़कर सुनाया, और छात्रों से किसी प्राकृतिक वस्तु का उपयोग करते हुए वाक्य को पूरा करने को कहा, और उन्हें एक उदाहरण दिया: 'The perfect life is like a hotel.' This is because you don't have to cook when you stay at a hotel!

फिर मैंने उन्हें जोड़ी में कार्य करके कुछ विचार देने को कहा और साथ ही साथ उन सुझावों के पीछे छिपे कारणों को भी बताने को कहा। अधिकांश छात्रों के लिए अंग्रेजी में कारण बता पाना कठिन था, इसलिए मैंने जाँच की कि क्या अन्य छात्र सही शब्दों की खोज करने में उनकी मदद कर सकते हैं। यदि वे फिर भी अंग्रेजी में नहीं समझा सकते थे, तो मैंने उनसे उनकी स्थानीय भाषा का उपयोग करने को कहा। मेरे लिए महत्वपूर्ण यह था कि छात्र विषय में रुचि लें, और कविता को पढ़ने के लिए उत्सुक रहें।

इसके बाद, मैंने अपनी कक्षा को बताया कि वे ''The Perfect Life' शीर्षक वाली एक कविता पढ़ने जा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं कविता को ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाने जा रही हूँ, और और उन्हें उसे सुनना चाहिए और अपनी पाठ्य पुस्तकों में उसका अनुसरण करना चाहिए। मैंने समझाया कि कविता में कवि जीवन की तुलना प्राकृतिक वस्तुओं से करता है। मैंने उनसे उनके कविता को पढ़ते और सुनते समय यह नोट करने को कहा कि वे प्राकृतिक वस्तुएं क्या थीं। मैंने ऐसा इसलिए किया ताकि उनके पास पाठ को पढ़ने के लिए कोई कारण रहे। मैंने फिर कविता को बिना अनुवाद किए या समझाए, सस्वर पढ़ा।

फिर मैंने कक्षा से कुछ प्रश्न पूछे:

इस गतिविधि ने कविता को समझने में हर एक की मदद की। इसके बाद, कविता पर चर्चा करना अधिक आसान था, और छात्रों ने कविता को बेहतर तरह से याद भी किया।

गतिविधि 2: कक्षा में आजमाएं – छात्रों को पढ़ने के लिए तैयार करना

इससे पहले कि छात्र कोई पाठ या अन्य अंग्रेजी पठन–सामग्री पढ़ें, उन्हें तैयार करना हमेशा उपयोगी होता है (आप छात्रों को किसी सुनने की गतिविधि के लिए भी इसी तरह से तैयार कर सकते हैं – देखें इकाई *अंग्रेजी सुनने में अपने छात्रों की सहायता करना*।) निम्नलिखित चरणों का अनुसरण करें:

1. ऐसा कोई पाठ चुनें जिसे आपके छात्रों ने अब तक नहीं पढ़ा है (शायद पाठ्यपुस्तक का अगला पाठ)। यह किसी भी तरह के पाठ का अंश हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार या रिपोर्ट।
2. कक्षा के सामने, अंश को पढ़ें। कोई पठन–पूर्व गतिविधि नोट करें जिसे आप अपने छात्रों से पाठ को पढ़ने से पहले करवाना चाहते हैं। यहाँ पठन–पूर्व गतिविधियों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:
   - शीर्षक को बोर्ड पर लिखें, और छात्रों से अंदाजा लगाने को कहें कि पाठ किस बारे में है
   - उन्हें मुख्य विषय पर चर्चा करने को कहें (उदाहरण के लिए, यदि विषय घरेलू कामकाज के बारे में है, तो आप उनसे इस बात पर चर्चा करने को कह सकते हैं कि घर में कौन क्या करता है)
   - पाठ में से कुछ कठिन शब्द और वाक्यांश पढ़ाएं
   - पाठ में से कुछ शब्दों और वाक्यांशों को बोर्ड पर लिखें और छात्रों से उनका प्रयोग वाक्यों में करने को कहें।
3. कक्षा में, यह गतिविधि अपने छात्रों के साथ करें। यदि छात्र अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग करते हैं, तो वे महत्वपूर्ण शब्द और वाक्यांश खोजने में उनकी सहायता करें जिनकी उन्हें अंग्रेजी में जरूरत पड़ती है। इससे उन्हें पाठ या अंश को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद मिलेगी।

विचार के लिए रुकें

इस गतिविधि को आजमाने के बाद विचार करने के लिए यहॉं कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- कक्षा में पठन–पूर्व गतिविधि करने में कितना समय लगा?
- क्या आपके छात्र गतिविधि में रुचि लेते दिखाई दिए? क्या कोई ऐसे छात्र थे जिन्हें रुचि नहीं थी? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?
- क्या इस पठन–पूर्व गतिविधि ने पाठ को समझने में उनकी मदद की?

आप सोच सकते हैं कि पठन–पूर्व गतिविधियाँ बहुत ज्यादा समय ले लेती हैं, और अध्याय बस शुरू कर देने से समय बचेगा लेकिन इस तरह की गतिविधियाँ अधिक समय लें ऐसा जरूरी नहीं है – पाँच या दस मिनट भी छात्रों को पढ़ने के लिए तैयार करने में मददगार हो सकते हैं।

उम्मीद है कि ये गतिविधियाँ आपके छात्रों की दिलचस्पी को बढ़ाएंगी और अध्यायों को बेहतर ढंग से समझने में उनकी सहायता करेंगी। नोट करें कि कौन से छात्र समझ रहे हैं और कौन नहीं ताकि आप उन लोगों की आगे सहायता कर सकें जिन्हें समझने में अब भी कठिनाई हो रही है। छात्रों के पढ़ने से पहले विभिन्न गतिविधियों को आजमाएं और देखें कि कौन सी अधिक प्रभावी हैं।

2 पाठ को पढ़ते समय उसे समझने में छात्रों की मदद करना

छात्रों को पठन–पूर्व गतिविधि देने से जो कुछ वे पढ़ने जा रहे हैं उसके लिए तैयार होने में उन्हें मदद मिलती है। छात्रों को अपने आप मौन होकर पढ़ने के लिए समय देना (चित्र 1) उन्हें पाठ को समझने – और उसका आनंद लेने – में भी मदद कर सकता है। निम्नलिखित में, आप वे गतिविधियाँ देखेंगे जो आप अपने छात्रों को मौन होकर पढ़ते समय दे सकते हैं ताकि वे समझ सकें कि वे क्या पढ़ रहे हैं।

चित्र 1 एक छात्रा मौन होकर पढ़ते हुए।

विद्यार्थी क्या पढ़ रहे हैं इसे समझने में मदद करने के लिए उन्हें मौन वाचन करते समय कुछ विचार बिन्दु देना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए प्रश्नों के उत्तरों की तलाश करना आपके छात्रों को पाठ को पढ़ने के लिए एक प्रयोजन देता है और वे जो कुछ पढ़ रहे हैं उस पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है।

छात्रों को मौन वाचन के समय उत्तर देने के लिए प्रश्न देने से भी आपको इस बात का आकलन करने में मदद मिलेगी कि छात्रों ने कितना समझा है। छात्र अलग अलग रफ्तारों से पढ़ेंगे, और अलग अलग बातें समझेंगे। जब आपके छात्र पढ़ रहे हों तब कमरे में घूमें। नोट करें कि किन छात्रों को प्रश्नों का उत्तर देने में समस्या हो रही है और किन छात्रों को गतिविधि आसान लग रही है।

वीडियो: निगरानी करना और फीडबैक देना

गतिविधि 3: कक्षा में आजमाएं – पाठ पढ़ते समय उसे समझने में अपने छात्रों की मदद करने के लिए मौन पठन का उपयोग करना

अपनी कक्षा में मौन पठन आजमाने के लिए इन चरणों का अनुसरण करें:

1. ऐसा कोई पाठ चुनें जिसे आपके छात्रों ने अब तक नहीं पढ़ा है (ये पाठ्यपुस्तक का अगला अध्याय हो सकता है।)। वह किसी भी तरह का पाठ हो सकता है – गद्य, पद्य, नाटक या अखबार या रिपोर्ट। यह वही पठन–सामग्री हो सकती है जिसका उपयोग आपने गतिविधि 1 में किया था।

2. कक्षा के सामने, पाठ को पढ़ें। ऐसे चार या पाँच प्रश्न सोचें जो आप इसके बारे में पूछ सकते हैं। यदि यह कोई लंबा पाठ है, तो इसके एक खंड के बारे में पूछे जा सकने वाले प्रश्न सोचें। सुनिश्चित करें कि प्रश्न पाठ के पाठ के अर्थ और उसके घटनाक्रम के बारे में हैं (उदाहरण के लिए, 'What advice does the writer give?'), उसमें प्रयुक्त भाषा के बारे में नहीं (उदाहरण के लिए, 'What does "doth" mean?')। पाठ (एक पत्र) के उदाहरण और उसके अर्थ के बारे में आपके द्वारा पूछे जा सकने वाले कुछ प्रश्नों के लिए संसाधन 1 देखें। प्रश्न पूछने के बारे में आप इकाई 'समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं' में अधिक जानकारी पा सकते हैं।

3. कक्षा में, छात्रों को पाठ के बारे में अपने प्रश्न दें। आप इन प्रश्नों को बोर्ड पर लिख सकते हैं, या उन्हें लिखवा सकते हैं। ऐसा छात्रों के पाठ को पढ़ने से *पहले* करें।

4. छात्रों से अध्याय या पाठ को पढ़ने के कहें। यदि उसमें दो या तीन अनुच्छेद हैं, तो उनसे उसका केवल एक भाग पढ़ने को कहें। छात्रों से मौन होकर पढ़ने और प्रश्नों के उत्तर खोजने को कहें। उन्हें बताएं कि हर शब्द को समझना महत्वपूर्ण नहीं है। उन्हें एक समय सीमा दें। छात्रों के पढ़ते समय, कमरे में चहलकदमी करते हुए जाँच करें कि हर कोई पढ़ रहा है और किसी भी समस्या या प्रश्न का समाधान करें।

5. जब समय सीमा समाप्त हो जाए, तब छात्रों से प्रश्नों का उत्तर देने को कहें। आप संपूर्ण कक्षा से जवाब मांग सकते हैं, या वे अपने उत्तरों की तुलना करने के लिए जोड़ियों में काम कर सकते हैं। यदि उन्हें अपनी बात अंग्रेजी में कहने में कठिनाई हो रही हो तो वे अपनी स्थानीय भाषा का उपयोग कर सकते हैं। यदि उन्हें स्वयं को व्यक्त करने में कठिनाई हो रही हो – तो उनकी सहायता करने का प्रयास करें – या उनसे एक दूसरे की मदद करवाएं। स्वयं प्रश्नों का उत्तर न दें, धीरज रखें और छात्रों को उत्तर देने दें।

6. अपने छात्रों से पूछें कि उन्होंने पाठ से और क्या सीखा है या उसमें क्या रुचिकर पाया है, और उनसे उसके कारण बताने को कहें।

7. इस गतिविधि के बाद, या अगली कक्षा में, यदि आपको लगे कि छात्रों ने पाठ को ठीक से नहीं समझा है तो आप आगे बढ़ते हुए पाठ को और उसमें प्रयुक्त भाषा को अधिक विस्तार से देख सकते हैं।

विचार के लिए रुकें

इस गतिविधि को आजमाने के बाद विचार करने के लिए यहाँ कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- क्या छात्रों के मौन पठन गतिविधि करते समय उनको समय सीमा देने से उनके पठन को फोकस करने में सहायता मिली?
- आपके विचार से अनुवाद या स्पष्ट किए बगैर छात्रों को कितना समझ में आया?

समय सीमा महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि कुछ छात्र अन्य लोगों से अधिक तेजी से पढ़ेंगे, और कुछ अन्य लोगों से अधिक समझेंगे। जो भी हो, आपके द्वारा तय की गई समय सीमा में सभी छात्र अध्याय का कम से कम कुछ भाग पढ़ने में समर्थ होंगे, और उन्हें सामग्री का कुछ भाग तो समझ में आएगा। यदि कुछ छात्र अन्य लोगों से पहले समाप्त कर लेते हैं, तो वे पूरा अध्याय या अध्याय के एक खंड को दोबारा पढ़ सकते हैं।

जब वे मौन होकर पढ़ते हैं, तब आपके छात्र हर शब्द को नहीं समझेंगे। उन्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है, और जब वे पहली बार कोई चीज पढ़ते हैं तो यह बिल्कुल सामान्य बात है। महत्वपूर्ण यह है कि वे सबसे आवश्यक जानकारी, या पाठ के संदेश को समझें। आप उनसे जो प्रश्न पूछें वे पाठ के संदेश को खोजने में विद्यार्थियों की मदद करने वाले होने चाहिए। अभ्यास से, छात्र अपने बल पर बेहतर ढंग से पढ़ने लगेंगे।

अधिकांश लोगों के लिए, मौन होकर पढ़ते समय पाठ का आनंद लेना और उसे समझना अधिक आसान होता है। फिर भी अंग्रेजी कक्षा में, छात्रों से अक्सर पाठों को सस्वर पढ़ने को कहा जाता है – या शिक्षक अपने छात्रों को सस्वर पढ़कर सुनाते हैं। सस्वर पढ़ना एक उपयोगी तकनीक हो सकती है तथापि, उसे हर समय करने से स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीखने छात्रों की प्रगति में बाधा पड़ सकती है।

3 पाठ को पढ़ने के बाद उसकी समझ की जाँच करना

छात्रों के पाठ को पढ़ लेने के बाद, उन्हें पाठ की महत्वपूर्ण बातों या लेखक द्वारा कही गयी कुछ महत्वपूर्ण बातों की संभवतः कुछ समझ होगी। उन्हें शब्दावली और भाषा की भी थोड़ी–बहुत समझ होगी। पाठ के पढ़ने के बाद, आपको जाँचना चाहिए कि छात्रों ने कितना समझा है।

जिन गतिविधियों का उपयोग आप छात्रों की समझ की जाँच करने के लिए कर सकते हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **बोध–संबंधी प्रश्नः** आप इन्हें पाठ्यपुस्तक में पा सकते हैं, या आप स्वयं अपने बना सकते हैं। उन्हें बोर्ड पर लिखें या उन्हें अपने छात्रों को लिखवाएं। एक विकल्प है अध्याय को पढ़ने के बाद छात्रों से समूहों में स्वयं अपने बोध–संबंधी प्रश्न लिखने को कहना। समूह प्रश्नों का आदान–प्रदान करते हैं और एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर देते हैं (देखें इकाई '*समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं*')।
- **चर्चाएं और सारांशः** छात्र जो कुछ उन्होंने पाठ के बारे में समझा है समूहों में उस पर चर्चा करते हैं। वे घटनाक्रम का सारांश, या पाठ की सबसे महत्वपूर्ण बातें लिख सकते हैं।
- **व्याकरण और शब्दावली विकासः** पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों में शब्दावली और व्याकरण संबंधी संरचनाओं के उदाहरण होते हैं जिन्हें छात्र सीख सकते हैं और उपयोग में ला सकते हैं (देखें इकाई *'व्यावहारिक अंग्रेजी व्याकरण'*)। अध्याय को पढ़ने के बाद, ऐसी गतिविधियाँ करें जिनमें आपके छात्र इनमें से कुछ शब्दों या संरचनाओं का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें अध्याय के लिए किसी नई शब्दावली का उपयोग करते हुए कुछ वाक्य या अनुच्छेद लिखने को कहें।

वे गतिविधियाँ, जिनमें आप जाँच करते हैं कि छात्रों ने पाठ के बारे में कितना समझा है, या उन्हें किसी अंश की भाषा का उपयोग करने को प्रोत्साहित करते हैं, पठनोपरान्त गतिविधियाँ कहलाती हैं। वे आप और आपके छात्रों की यह देखने में मदद करती हैं कि उन्होंने कितना समझा है, और वे नई भाषा सीखने में छात्रों की मदद करती हैं।

गतिविधि 4: पठनोपरान्त गतिविधि का नियोजन और निष्पादन करना

उस पाठ का उपयोग करने वाले अध्याय के बारे में सोचें जो आप अगले सप्ताह पढ़ाने जा रहे हैं। पठनोपरान्त गतिविधियों के लिए विचारों को देखें और तय करें कि आप अपनी कक्षा के लिए किन का उपयोग करेंगे। अध्यायों के नियोजन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, देखें संसाधन 2।

पठनोपरान्त गतिविधि का उपयोग करते हुए अध्याय का नियोजन और निष्पादन करें। जब छात्र पठनोपरान्त गतिविधियाँ कर रहे हों, कमरे में घूमकर जाँचें कि उन्होंने क्या समझा है, और इसका उपयोग पठन में छात्रों की प्रगति के अपने आकलन के भाग के रूप में करें।

क्या इस गतिविधि ने छात्रों की समझ का आकलन करने में आपकी सहायता की? अपने आकलनों का उपयोग आप अपने अगले अध्याय का नियोजन करने के लिए कैसे करेंगे? आकलन पर अधिक जानकारी के लिए, संसाधन 3 देखें।

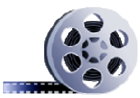

वीडियोः पाठों का नियोजन करना

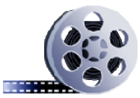

वीडियोः प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

4 तकनीकों का संयोजन करना

अब **केस स्टडी** 2 पढ़ें।

केस स्टडी 2: श्रीमती गुप्ता 'भारत के नाम नेहरू के पत्र' पर एक विचार मंथन सत्र संचालित कर रही हैं

श्रीमती गुप्ता ने इस इकाई की तकनीकों का उपयोग कक्षा 9 को एक अंश पढ़ाने के लिए किया। उन्होंने कक्षा को पठन–पूर्व गतिविधि के लिए तैयार किया और फिर छात्रों के पठन को पूरा कर लेने के बाद अंश के विषय से संबंधित भाषा का अभ्यास करने के लिए कुछ गतिविधियाँ कीं।

पिछले सप्ताह, मैं नेहरूजी द्वारा लिखित 'A letter to the children of India' पाठ कक्षा 9 को पढ़ा रही थी [संसाधन 1 देखें]। मेरे छात्रों द्वारा पाठ को पढ़ने से पहले, मैंने बोर्ड पर शीर्षक लिखा, और समझाया कि पत्र किस बारे में है। मैंने उन्हें बताया कि वह एक वृद्ध आदमी द्वारा लिखा गया था जो युवा पीढ़ी को कुछ सलाह दे रहे थे।

मैंने अपने छात्रों से कुछ ऐसे सुझाव सोचने के लिए कहा जो वे भारत के बच्चों को देंगे। एक–दो छात्रों ने कुछ सुझाव दिए, जैसे 'You should visit Delhi!' और 'You should learn about technology!' तब मैंने उनसे जोड़ियों में काम करने, और उन पाँच सुझावों को लिखने को कहा जो वे देंगे। मैंने उनसे वाक्यों को अंग्रेजी में लिखने को कहा। मुझे उन गलतियों की चिंता नहीं थी जो छात्रों के लिखते समय हो रही थीं। मैं तो बस उनसे कुछ विचार चाहती थी। तीन मिनट बाद, मैंने गतिविधि को समाप्त कर दिया, और तीन या चार जोड़ियों से उन्होंने जो कुछ लिखा था उसके कुछ उदाहरण पढ़कर सुनाने को कहा।

फिर मैंने कक्षा से नेहरूजी के पत्र को मौन रहकर पढ़ने को कहा। मैंने उनसे पढ़ते समय उस सुझाव को रेखांकित करने को कहा जो उन्होंने अपने पत्र में दिये थे। मैंने उन्हें पढ़ने और सुझाव को खोजने के लिए दस मिनट की समय सीमा दी। जब वे पढ़ रहे थे, मैंने कमरे में घूमकर यह सुनिश्चित किया कि हर एक ने समझ लिया है कि उन्हें क्या करना है। मैंने देखा कि अजला पत्र में कुछ भी रेखांकित नहीं कर रही थी। उसको समझ में नहीं आया था कि उसे सुझाव की तलाश करनी है, इसलिए मैंने उसे समझाया और कुछ खोजने में उसकी मदद की। तब वह अपने आप यह काम करने लगी।

जब समय खत्म हो गया, तब मैंने अपने छात्रों से कहा कि वे अपने बगल में बैठे सहपाठी के साथ उनको मिले सुझाव की तुलना करें। मैंने उनसे यह भी चर्चा करने को कहा कि वह सुझाव उन सुझावों के कितने समान या उससे कितनी भिन्न थी जो उन्होंने पत्र को पढ़ने से पहले लिखी थी। जब वे अपने विचारों की तुलना कर रहे थे, तब मैं कमरे में घूमती रही और वार्तालापों को सुना। यह स्पष्ट था कि कुछ छात्रों ने पत्र में दिये गये सुझाव समझ लिए थे, जबकि कुछ छात्रों को कठिनाई हो रही थी। कुछ मिनटों बाद, मैंने कक्षा से बातचीत करना बंद करने को कहा। फिर हमने पत्र में दिए गए सुझावों पर एक समग्र कक्षा के रूप में चर्चा की, और मैंने सभी ऐसे शब्दों को स्पष्ट किया जो विद्यार्थियों के लिए दी गई सलाह को समझने में बाधक थे।

इसके बाद, मैंने बोर्ड पर ऐसे कुछ वाक्यांश लिखे जिनका उपयोग हम अंग्रेजी में सलाह देते समय कर सकते हैं:

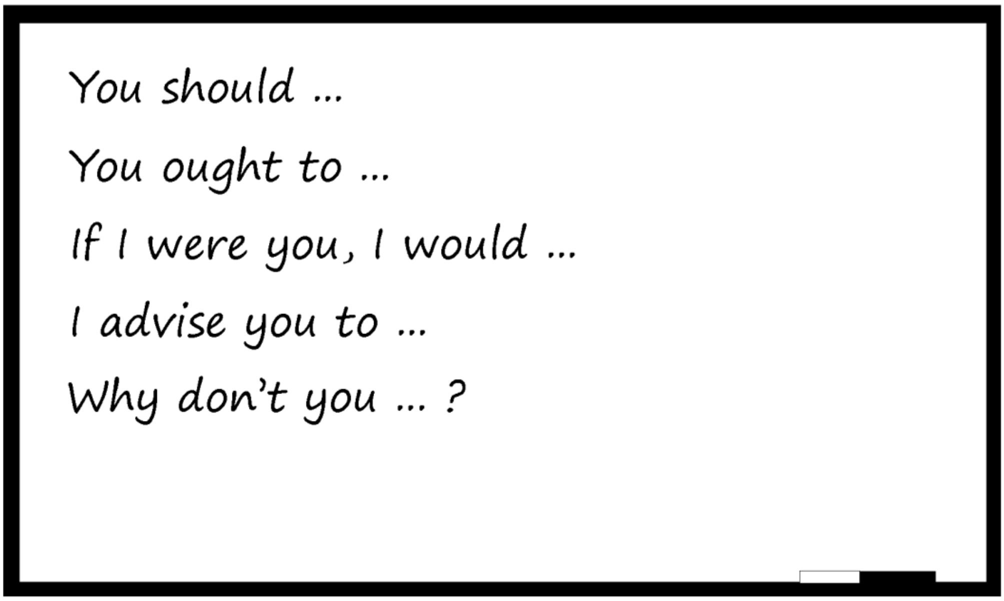

मैंने अपने छात्रों से यह कल्पना करने को कहा कि वे नेहरूजी की तरह बूढ़े दादा और दादी हैं, और अपने पोते–पोतियों के साथ बात कर रहे हैं। उनमें से कुछ को यह काफी मज़ेदार लगा और उन्हें यह विचार पसंद आया! मैंने उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहा जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया: 'You should work hard.' कुछ छात्रों ने कुछ और विचार दिए और मैंने उन्हें बोर्ड पर इस प्रकार लिख दिया:

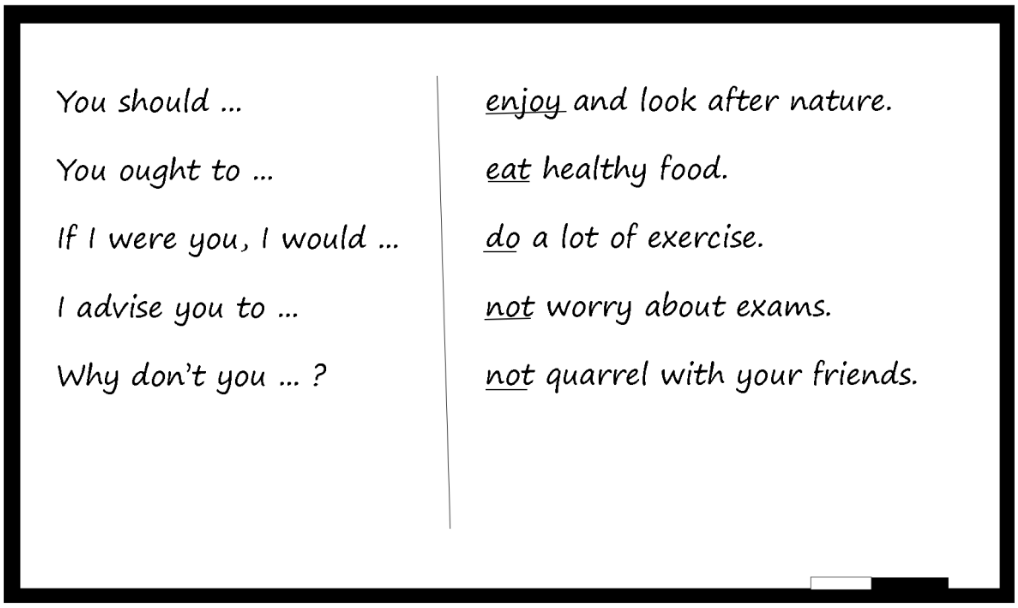

मैंने स्पष्ट किया कि छात्र किसी भी प्रारम्भिक वाक्यांश (बोर्ड के बायीं तरफ) को किसी भी समाप्ति वाक्यांश (बोर्ड के दाहिने तरफ) के साथ उपयोग में ला सकते हैं। मैंने क्रियाओं ('enjoy', 'eat', 'do', 'be', 'avoid') को रेखांकित किया और समझाया कि उन्हें इन वाक्यांशों के बाद क्रियाओं के अनियत रूप (infinite form) का उपयोग करना चाहिए। फिर मैंने वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ा, और छात्रों से उन्हें दोहराने को कहा ताकि वे अपने उच्चारण का अभ्यास कर सकें।

उसके बाद, मैंने छात्रों को जोड़ियों में व्यवस्थित किया, और उनसे कहा कि उनमें से एक दादा/दादी है, और दूसरा पोता/पोती। मैंने समझाया कि दादा/दादी द्वारा पोते/पोती को सलाह दी जानी चाहिए। जब वे तैयार हो गए, तो मैंने उन्हें भूमिकाओं का अभिनय करने के लिए दो या तीन मिनट दिए, और फिर उन्होंने अपनी भूमिकाएं आपस में बदल लीं। जब मैं सुन रही थी, तब मैंने देखा कि कुछ जोड़ियाँ बोर्ड पर लिखी सलाह का उपयोग कर रही थीं, जबकि अधिक आश्वस्त वक्ता नए वाक्यांश बोल रहे थे।

अंत में, मैंने छात्रों से, एक नियत कार्य (assignment) के रूप में, 'A letter to the children of India' शीर्षक वाला एक स्वयं अपना पत्र लिखने को कहा। मैंने उनसे उन कुछ वाक्यांशों का उपयोग करने को कहा जिनका उन्होंने अभी–अभी अभ्यास किया था, और यह कल्पना करने को कहा कि वह पत्र *टाइम्स ऑफ इंडिया* में प्रकाशित होगा। अगली कक्षा में मेरे पास कुछ बहुत रोचक पत्र पढ़ने के लिए उपलब्ध थे!

गतिविधि 5: कक्षा में आजमाएं – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

केस स्टडी 2 में, नेहरूजी के पत्र को पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के पश्चात् छात्र कई गतिविधियाँ करते हैं। इन गतिविधियों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। आप संसाधन 4 में शिक्षक की अध्याय योजना पा सकते हैं। यह अध्याय (या ऐसा ही कोई अध्याय) अपने छात्रों को पढ़ाने के लिए आप इस अध्याय योजना का उपयोग कर सकते हैं।

विचार के लिए रुकें

इस गतिविधि को आजमाने के बाद विचार करने के लिए यहां कुछ प्रश्न दिए गए हैं। यदि संभव हो, तो इन प्रश्नों की चर्चा किसी सहकर्मी के साथ करें।

- क्या आप सोचते हैं कि इस इकाई की तकनीकों ने पाठ को समझने में आपके छात्रों की सहायता की?
- क्या आपके छात्रों ने सलाह देने की भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग किया?

आपको हर बार कोई अध्याय पढ़ाते समय सभी तकनीकों का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। फिर भी, आपसे जितना हो सके और जितनी बार हो सके उपयोग करना अच्छी बात है। आप इन तकनीकों का उपयोग पाठ्यपुस्तक के किसी भी अध्याय, या किसी भी अन्य पाठ (उदा. अखबार का कोई लेख) के साथ कर सकते हैं। किसी अन्य अध्याय या पाठ के साथ ऐसी ही योजना लिखें, और उसे अपने सहकर्मियों के साथ साझा करें।

5 सारांश

समझने के लिए पढ़ने में छात्रों की मदद करने के लिए, आप उन्हें पठन–पूर्व गतिविधियाँ दे सकते हैं। आप छात्रों को मौन होकर पढ़ने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं, और उनके पढ़ते समय उन्हें कुछ करने को दे सकते हैं (जैसे प्रश्नों के उत्तर खोजना)। आप उन्हें समझ की जाँच करने, अध्याय से नई भाषा का अभ्यास करने या बोलने या लिखने जैसे भाषा संबंधी कौशल विकसित करने के लिए पठनोपरान्त गतिविधियाँ दे सकते हैं। इन तकनीकों के संयोजन का उपयोग पाठ्यपुस्तक या कहीं और से भी लिए गए किसी भी पाठ के साथ किया जा सकता है।

यदि आप अपने स्वयं के पठन कौशलों को विकसित करने के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो संसाधन 5 देखें, और यदि आप पठन सिखाने के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो अतिरिक्त संसाधन खंड देखें।

इस विषय पर अन्य माध्यमिक अंग्रेजी शिक्षक विकास इकाइयाँ ये हैं:

- *समग्र–कक्षा पठन दिनचर्याएं:* आप इस इकाई में पठन के बारे में अधिक जान सकते हैं। इसमें उन अनेकों तकनीकों और कार्यनीतियों पर चर्चा की गई है जिनका उपयोग छात्र अपने पठन कौशलों का विकास करने के लिए कर सकते हैं।
- *शब्दावली पढ़ाने के लिए कार्यनीतियाँ:* यह इकाई इस बात पर चर्चा करती है कि अध्यापक किसी पाठ के शब्दों को समझने के लिए छात्रों की कैसे सहायता कर सकते हैं, और शब्दों को किसी सन्दर्भ में पढ़ाने के लिए पाठों के उपयोग पर चर्चा करती है।
- *'आनन्द के लिए पठन को प्रोत्साहन'* इस इकाई में आप गहन पठन में छात्रों की मदद करने की तकनीकों के बारे में जान सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

Dear Children,

I like being with children and talking to them and, even more, playing with them. For the moment I forget that I am terribly old and it is very long ago since I was a child. But when I sit down to write, I cannot forget my age and the distance that separates you from me. Old people have a habit of delivering sermons and good advice to the young.

I remember that I disliked this very much long ago when I was a boy. So I suppose you do not like it very much either. Grown-ups also have a habit of appearing to be very wise, even though very few of them possess much wisdom. I have not yet quite made up my mind whether I am wise or not. Sometimes listening to others I feel that I must be wise and brilliant and important. Then, looking at myself, I begin to doubt this. In any event, people who are wise do not talk about their wisdom and do not behave as if they were very superior persons …

What then shall I write about? If you were with me, I would love to talk to you about this beautiful world of ours, about flowers, trees, birds, animals, stars, mountains, glaciers and all the other beautiful things that surround us in the world. We have all this beauty all around us and yet we, who are grown-ups, often forget about it and lose ourselves in our arguments or in our quarrels. We sit in our offices and imagine that we are doing very important work.

I hope you will be more sensible and open your eyes and ears to this beauty and life that surrounds you. Can you recognise the flowers by their names and the birds by their singing? How easy it is to make friends with them and with everything in nature, if you go to them affectionately and with friendship. You must have read many fairy tales and stories of long ago. But the world itself is the greatest fairy tale and story of adventure that was ever written. Only we must have eyes to see and ears to hear and a mind that opens out to the life and beauty of the world.

Grown-ups have a strange way of putting themselves in compartments and groups. They build barriers … of religion, caste, colour, party, nation, province, language, customs, and of rich and poor. Thus they live in prisons of their own making. Fortunately, children do not know much about these barriers, which separate. They play and work with each other and it is only when they grow up that they begin to learn about these barriers from their elders. I hope you will take a long time in growing up …

> Some months ago, the children of Japan wrote to me and asked me to send them an elephant. I sent them a beautiful elephant on behalf of the children of India. … This noble animal became a symbol of India to them and a link between them and the children of India. I was very happy that this gift of ours gave so much joy to so many children of Japan, and made them think of our country … remember that everywhere there are children like you going to school and work and play, and sometimes quarrelling but always making friends again. You can read about these countries in your books, and when you grow up many of you will visit them. Go there as friends and you will find friends to greet you.
>
> You know we had a very great man amongst us. He was called Mahatma Gandhi. But we used to call him affectionately Bapuji. He was wise, but he did not show off his wisdom. He was simple and childlike in many ways and he loved children … he taught us to face the world cheerfully and with laughter.
>
> Our country is a very big country and there is a great deal to be done by all of us. If each one of us does his or her little bit, then all this mounts up and the country prospers and goes ahead fast.
>
> I have tried to talk to you in this letter as if you were sitting near me, and I have written more than I intended.
>
> (Nehru, 1949)

कुछ प्रश्न जो आप पत्र के बारे में पूछ सकते हैं:

- Who is the writer of the letter? Whom is he writing to?
- How old is the writer of the letter?
- What is the main purpose of the letter?
- How does the writer describe grown-ups?
- How are children different from grown-ups?
- What advice does the writer give?

संसाधन 2: पाठों का नियोजन करना

अपने पाठों का नियोजन और उनकी तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है

अच्छे अध्यायों की योजना बनानी होती है। नियोजन आपके अध्यायों को स्पष्ट और सुसामयिक बनाने में मदद करता है, जिसका अर्थ यह है कि आपके छात्र सक्रिय और रुचिपूर्ण बने रह सकते हैं। प्रभावी नियोजन में कुछ अंतर्निहित लचीलापन भी शामिल होता है ताकि अध्यापक पढ़ाते समय अपने छात्रों की शिक्षण-प्रक्रिया के बारे में कुछ पता चलने पर उसके प्रति अनुक्रिया कर सकें। अध्यायों की श्रंखला के लिए योजना पर काम करने में छात्रों और उनके पूर्व-शिक्षण को जानना, पाठ्यक्रम में से आगे बढ़ने के क्या अर्थ है, और छात्रों के पढ़ने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों की खोज करना शामिल होता है।

नियोजन एक सतत प्रक्रिया है जो आपको अलग-अलग अध्यायों और साथ ही, एक के ऊपर एक विकसित होते अध्यायों की श्रंखला, दोनों की तैयारी करने में मदद करती है। अध्याय के नियोजन के चरण ये हैं:

- अपने छात्रों की प्रगति के लिए आवश्यक बातों के बारे में स्पष्ट रहना
- तय करना कि आप कौन से ऐसे तरीके से पढ़ाने जा रहे हैं जिसे छात्र समझेंगे और आपको जो पता लगेगा उसके प्रति अनुक्रिया करने के लचीलेपन को कैसे बनाए रखेंगे
- पीछे मुड़कर देखना कि अध्याय कितनी अच्छी तरह से चला और आपके छात्रों ने क्या सीखा ताकि भविष्य के लिए योजना बना सकें।

अध्यायों की श्रंखला का नियोजन करना

जब आप किसी पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हैं, तो नियोजन का पहला भाग यह निश्चित करना होता है कि पाठ्यक्रम के विषयों और प्रसंगों को खंडों या टुकड़ों में किस सर्वोत्तम ढंग से विभाजित किया जाय। आपको छात्रों के प्रगति करने तथा कौशलों और ज्ञान का क्रमिक रूप से विकास करने के लिए उपलब्ध समय और तरीकों पर विचार करना होगा। आपके अनुभव या सहकर्मियों के साथ चर्चा से आपको पता चल सकता है कि किसी विषय के लिए चार अध्याय लगेंगे, लेकिन किसी अन्य विषय के लिए केवल दो। आपको इस बात से अवगत रहना चाहिए कि आप भविष्य

में उस सीख पर अलग तरीकों से और अलग अलग समय पर तब लौट सकते हैं, जब अन्य विषय पढ़ाए जाएंगे या विषय को विस्तारित किया जाएगा।

सभी पाठों की योजनाओं में आपको निम्न बातों के बारे में स्पष्ट रहना होगा:

- विद्यार्थियों को आप क्या पढ़ाना चाहते हैं
- आप उस शिक्षण का परिचय कैसे देंगे
- विद्यार्थियों को क्या और क्यों करना होगा।

आप शिक्षण को सक्रिय और रोचक बनाना चाहेंगे ताकि विद्यार्थी सहज और उत्सुक महसूस करें। इस बात पर विचार करें कि पाठों की श्रृंखला में विद्यार्थियों से क्या करने को कहा जाएगा ताकि आप न केवल विविधता और रुचि बल्कि लचीलापन भी बनाए रखें। योजना बनाएं कि जब आपके विद्यार्थी पाठों की श्रृंखला में से प्रगति करेंगे तब आप उनकी समझ की जाँच कैसे करेंगे। यदि कुछ भागों को अधिक समय लगता है या वे जल्दी समझ में आ जाते हैं तो समायोजन करने के लिए तैयार रहें।

अलग-अलग पाठों की तैयारी करना

पाठों की शृंखला को नियोजित कर लेने के बाद, प्रत्येक पाठ को उस प्रगति के आधार पर अलग से नियोजित करना होगा जो विद्यार्थियों ने उस बिंदु तक की है। आप जानते हैं या पाठों की शृंखला के अंत में यह आप जान सकेंगे कि विद्यार्थियों ने क्या सीख लिया होगा, लेकिन आपको किसी अप्रत्याशित चीज को फिर से दोहराने या अधिक शीघ्रता से आगे बढ़ने की जरूरत हो सकती है। इसलिए हर पाठ को अलग से नियोजित करना चाहिए ताकि आपके सभी विद्यार्थी प्रगति करें और सफल तथा सम्मिलित महसूस करें।

पाठ की योजना के भीतर आपको सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक गतिविधि के लिए पर्याप्त समय है और सभी संसाधन तैयार हैं, जैसे क्रियात्मक कार्य या सक्रिय समूहकार्य के लिए। बड़ी कक्षाओं के लिए सामग्रियों के नियोजन के हिस्से के रूप में आपको अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग प्रश्नों और गतिविधियों की योजना बनानी पड़ सकती है।

जब आप नए विषय पढ़ाते हैं, आपको आत्मविश्वासी होने के लिए अभ्यास करने और अन्य अध्यापकों के साथ विचारों पर बातचीत करने के लिए समय की जरूरत पड़ सकती है।

तीन भागों में अपने पाठों को तैयार करने के बारे में सोचें। इन भागों पर नीचे चर्चा की गई है।

1 परिचय

पाठ के शुरू में, विद्यार्थियों को समझाएं कि वे क्या सीखेंगे और करेंगे, ताकि हर एक को पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है। विद्यार्थी पहले से ही जो जानते हैं उन्हें उसे साझा करने की अनुमति देकर वे जो करने वाले हों उसमें उनकी रुचि पैदा करें।

2 पाठ का मुख्य भाग

विद्यार्थी जो कुछ पहले से जानते हैं उसके आधार पर सामग्री की रूपरेखा बनाएं। आप स्थानीय संसाधनों, नई जानकारी या सक्रिय पद्धतियों के उपयोग का निर्णय ले सकते हैं जिनमें समूहकार्य या समस्याओं का समाधान करना शामिल है। उपयोग करने के लिए संसाधनों और उस तरीके की पहचान करें जिससे आप अपनी कक्षा में उपलब्ध स्थान का उपयोग करेंगे। विविध प्रकार की गतिविधियों, संसाधनों, और समयों का उपयोग पाठ के नियोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि आप विभिन्न पद्धतियों और गतिविधियों का उपयोग करते हैं, तो आप अधिक विद्यार्थियों तक पहुँचेंगे, क्योंकि वे भिन्न तरीकों से सीखेंगे।

3 सीखने की जाँच के साथ पाठ की समाप्ति

हमेशा यह पता लगाने के लिए समय (पाठ के दौरान या उसकी समाप्ति पर) रखें कि कितनी प्रगति की गई है। जाँच करने का अर्थ हमेशा परीक्षा ही नहीं होता है। आम तौर पर उसे शीघ्र और उसी जगह पर होना चाहिए – जैसे नियोजित प्रश्न या विद्यार्थियों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे प्रस्तुत करते देखना – लेकिन आपको लचीला होने के लिए और विद्यार्थियों के उत्तरों से आपको जो पता चलता है उसके अनुसार परिवर्तन करने की योजना बनानी चाहिए।

पाठ को समाप्त करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है शुरू के लक्ष्यों पर वापस लौटना और विद्यार्थियों को इस बात के लिए समय देना कि वे एक दूसरे को और आपको उस शिक्षण से हुई उनकी प्रगति के बारे में बता सकें। विद्यार्थियों की बात को सुनकर आप सुनिश्चित कर सकेंगे कि आपको पता रहे कि अगले पाठ के लिए क्या योजना बनानी है।

पाठों की समीक्षा करना

हर पाठ का पुनरावलोकन करें और यह बात दर्ज करें कि आपने क्या किया, आपके विद्यार्थियों ने क्या सीखा, किन संसाधनों का उपयोग किया गया और सब कुछ कितनी अच्छी तरह से संपन्न हुआ ताकि आप अगले पाठों के लिए अपनी योजनाओं में सुधार या उनका समायोजन कर सकें। उदाहरण के लिए, आप निम्न का निर्णय कर सकते हैं:

- गतिविधियों में बदलाव करना
- खुले और बंद प्रश्नों की एक श्रंखला तैयार करना
- जिन विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता चाहिए उनके साथ फॉलो अप सत्र आयोजित करना।

सोचें कि आप विद्यार्थियों के सीखने में मदद के लिए क्या योजना बना सकते थे या अधिक बेहतर कर सकते थे।

जब आप हर पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ंगे आपकी पाठ संबंधी योजनाएं अपरिहार्य रूप से बदल जाएंगी, क्योंकि आप हर होने वाली चीज का पूर्वानुमान नहीं कर सकते। अच्छे नियोजन का अर्थ है कि आप जानते हैं कि आप शिक्षण को किस तरह से करना चाहते हैं और इसलिए जब आपको अपने विद्यार्थियों के वास्तविक अधिगम के बारे में पता चलेगा तब आप लचीले ढंग से उसके प्रति अनुक्रिया करने को तैयार रहेंगे।

संसाधन 3: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

छात्रों के अधिगम का मूल्यांकन करने के दो उद्देश्य हैं:

- **योगात्मक मूल्यांकन** (Summative assessment)ये पहले किये गये कार्यों का मूल्यांकन करता है। ये सामान्यतः परीक्षाओं के रूप में आयोजित किया जाता है। इसमें छात्रों को परीक्षा में प्रश्नों के दिए गए उत्तरों के आधार पर श्रेणीकृत किया जाता है।
- **निर्माणात्मक मूल्यांकन** (या अधिगम का मूल्यांकन) (Formative assessment) काफ़ी अलग है, और अधिक अनौपचारिक तथा निदान के रूप में होता है। शिक्षक उन्हें अधिगम प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों ने किसी चीज को समझा है या नहीं यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछना फिर इस मूल्यांकन के परिणामों का अगले अधिगम अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। अनुश्रवण और फ़ीडबैक निर्माणात्मक मूल्यांकन का हिस्सा है।

निर्माणात्मक मूल्यांकन अधिगम को बढ़ाता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश छात्रों को:

- समझना चाहिए कि उनसे क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है
- जानकारी होनी चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद मूल्यांकन किया जा सकता है:

- **पहले:** पढ़ाने से पहले मूल्यांकन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि छात्र क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह आधार-रेखा निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। छात्र क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से छात्रों को जिस विषय में पहले से ही महारत हासिल है, उसे दुबारा पढ़ाने की और जो वे नहीं जानते हैं किन्तु उन्हें जानना चाहिए, उस विषय को छोड़ देने के अवसर कम होंगे।
- **पढ़ाते समय:** कक्षा में पढ़ाते समय मूल्यांकन करने में यह देखना शामिल है कि क्या छात्र सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि छात्र वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- **पढ़ाने के बाद:** शिक्षण के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन पुष्टि करता है कि छात्रों ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आपका शिक्षण लक्ष्य कितना प्रभावपूर्ण रहा, इसका आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके छात्र क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि छात्रों को पाठ या पाठों की श्रंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको उसे उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि छात्रों को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और छात्रों से क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

छात्रों को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड दें, या शायद छात्रों को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने को कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले: जानना कि छात्र अपने अधिगम के किस स्तर पर हैं

अपने विद्यार्थियों में सुधार लाने के लिए, आपको व आपके विद्यार्थियों को उनकी वर्तमान स्थिति को जानना आवश्यक है।

- छात्रों को जोड़ी में कार्य करने को कहें; जिसमें वे किसी विषय के बारे में, पहले से जो कुछ जानते हैं उनकी सूची बनाएं तथा मानसिक चित्रण करें और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए बहुत ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक चित्रण या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा थम्ब्स-अप की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स-डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का मतलब है कि आप अपने छात्रों के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके छात्र यह मूल्यांकन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। आपके छात्रों को स्वयं अपने शिक्षण का भार उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समय: शिक्षा में छात्रों की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप छात्रों से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। निम्नांकित के द्वारा इस काम को करें:

- छात्रों को उनकी ताक़त और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी अधिगम का विकास कर सकते हैं, ये जाँचना कि वे आपकी सलाह को समझ रहे हैं तथा उसे उपयोग करने में सक्षम महसूस कर रहे हैं।

आपको छात्रों के लिए उनके अधिगम को बेहतर बनाने के लिए अवसर मुहैया कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में छात्रों के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के अंतराल को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको निम्नवत करना होगा:

- कुछ ऐसे कार्यों पर वापस नज़र दौड़ानी होगी, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार छात्रों के समूह बनाना, उन्हें अलग-अलग कार्य देना
- छात्रों को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'
- निम्नतम स्तर से उच्चतम स्तर तक के ऐसे कार्यों का उपयोग करना जिससे सभी छात्र प्रगति कर सकें। इन्हें इस तरह डिजाइन किया गया है कि सभी छात्र काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक समर्थ छात्रों को प्रतिबंधित न किया जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए प्रगति कर सकें।

पाठों की रफ़्तार को धीमा करके, अक्सर आप पढ़ाई को वास्तव में तेज़ करते हैं, क्योंकि आप छात्रों को यह सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं कि उन्हें सुधार लाने के लिए क्या करने की ज़रूरत है। छात्रों को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि अंतर कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े उपलब्ध करा रहे हैं।

पढ़ाने के बाद: प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब शिक्षण अधिगम चल रहा हो तब कक्षा-कार्य और गृह-कार्य निर्धारित करने के बाद आप के लिए ज़रूरी है कि:

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके छात्र कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना बनाने के लिए उपयोग में लाएँ
- छात्रों को फीड बैक दें।

मूल्यांकन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र, स्वयं स्कूल के अंदर और बाहर अलग प्रकार से अपनी गति से और अपनी शैली में सीखता है। इसलिए, छात्रों का मूल्यांकन करते समय आपको दो काम करने होंगे:

- विविध सूत्रों से - स्वयं अपने अनुभव से, स्वयं छात्र से, अन्य छात्रों से, अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से जानकारी एकत्रित करें
- छात्रों का व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में मूल्यांकन करें, तथा स्व-मूल्यांकन को बढ़ावा दें। अलग–अलग विधियों का प्रयोग आवश्यक है, क्योंकि कोई भी एक पद्धति आपके वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। छात्रों के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा करना तथा लिखित कक्षा कार्य और गृह-कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखन

भारत भर के सभी स्कूलों में रिकॉर्डिंग का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक छात्र के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की व्यवस्था नहीं होती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे कि:

- शिक्षण–अधिगम के समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
- छात्रों के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
- प्रत्येक छात्र का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- छात्रों की असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाने के बाद, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझा जा सके कि प्रत्येक छात्र किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता होगी। फिर इन निष्कर्षों के आधार पर काम करते हुए आप विद्यार्थियों को फीडबैक देकर, नए संसाधन खोजकर, समूहों को पुनर्व्यवस्थित कर या किसी अधिगम बिन्दु को दोहराकर अधिगम को बेहतर करने का प्रयास कर सकते हैं।

सुधार के लिए योजना बनाना

मूल्यांकन, ऐसी विशिष्ट और विविध अधिगम गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक छात्र को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने में आपकी सहायता कर सकते हैं जिसमें आप जरूरतमंद विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान देने के साथ–साथ प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को चुनौतीपूर्ण कार्य के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

संसाधन 4: अध्याय योजना – भारत के बच्चों के नाम एक पत्र

आप इस अध्याय योजना की संरचना का उपयोग किसी भी पाठ या गद्यांश के साथ कर सकते हैं। इसके विभिन्न अंगों को एक ही कक्षा में, या कई कक्षाओं में संचालित किया जा सकता है।

पठन–पूर्व

1. बोर्ड पर शीर्षक लिखें, और समझाएं कि पत्र किस बारे में है (एक वृद्ध आदमी भारत के बच्चों को सलाह दे रहे हैं)।

2. मैंने अपने छात्रों से कुछ सुझाव सोचने के लिए कहा जो वे भारत के बच्चों को देंगे। एक या दो सुझाव स्वीकार करें और उन्हें ब्लैकबोर्ड पर अंग्रेजी में लिखें।

3. छात्रों को जोड़ियों में संगठित करें। प्रत्येक जोड़ी से पाँच सुझावों पर चर्चा करने और उन्हें अंग्रेजी में लिखने को कहें। उनसे गलतियाँ हो जाने के बारे में चिंता न करने को कहें।

4. तीन मिनट बाद, छात्रों से लिखना बंद करने को कहें, और तीन या चार समूहों को कुछ उदाहरण पढ़ने को कहें।

सुझावः याद रखें कि यह चरण विचार प्राप्त करने और पाठ के लिए तैयारी करने के बारे में है। गलतियों पर ध्यान न दें। बल्कि विषय–वस्तु पर ध्यान दें; यानी, वह सुझाव जो आपके छात्र दे रहे हैं।

पढ़ते समय

1. छात्रों से पत्र को मौन होकर पढ़ने को कहें। उन्हें पत्र को पढ़ते समय उस सुझाव को रेखांकित करने को कहें जो नेहरूजी देते हैं। छात्रों को पत्र पढ़ने और सुझाव की खोज करने के लिए एक समय सीमा दें।

2. जब समय समाप्त हो जाय, तब छात्रों से उन्हें मिले सुझावों की तुलना किसी सहपाठी (जोड़ी के रूप में), या सहपाठियों (समूह के रूप में) के साथ करने को कहें। उनसे नेहरूजी के सुझाव और उनके अपने सुझावों के बीच समानताओं और भिन्नताओं पर चर्चा करने को कहें।

3. जब छात्र पत्र पर चर्चा करें, तब कमरे में घूमें और नोट करें कि छात्रों ने उसे कितनी अच्छी तरह से समझा है। यदि छात्रों को कोई समस्याएं हो रही हों, तो उनकी सहायता करें।

4. कुछ मिनट बाद, छात्रों से बात करना बंद करने को कहें और उस सुझाव पर चर्चा करें जो नेहरूजी सारी कक्षा को देते हैं।

सुझावः यह आपके लिए यह देखने का अवसर है कि आपके छात्रों ने पत्र को कितनी अच्छी तरह से समझा है। कोई बात नहीं यदि उन्होंने पाठ के हर शब्द को नहीं समझा है, लेकिन आपको यह देखना है कि उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण बातें समझ ली हैं। क्या आपके अधिकांश छात्र उस सुझाव सलाह को खोज पाए हैं जो नेहरूजी देते हैं? यदि नहीं, तो वह क्या चीज़ है जो उन्हें समझने से रोक रही है? आप उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं? कुछ छात्रों ने दूसरों से अधिक समझा है। शायद वे समझा सकते हैं।

पठनोपरान्त

1. सलाह देने के लिए कुछ वाक्यांश बोर्ड पर लिखेंः

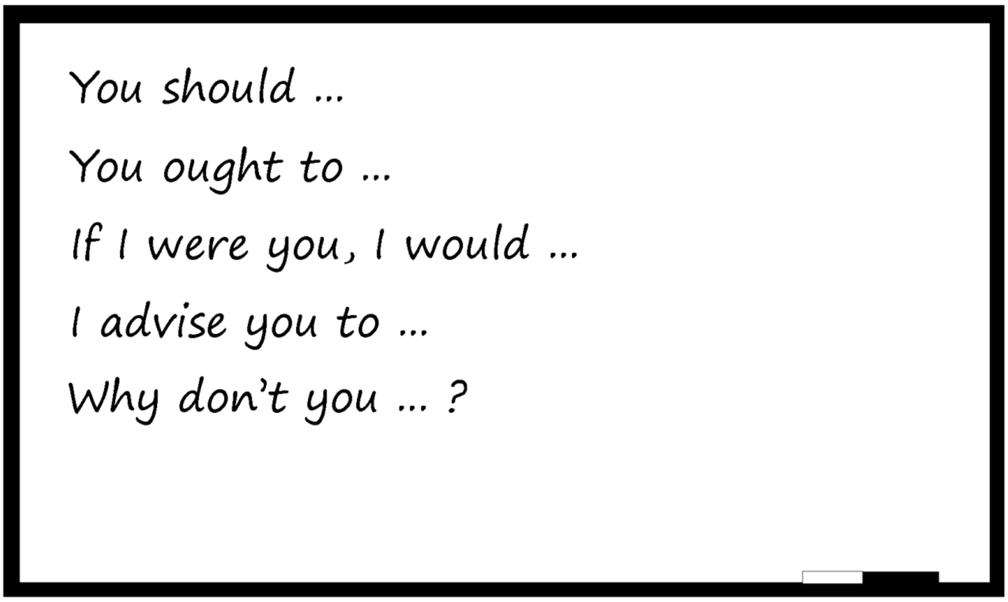

2. अपने छात्रों से कल्पना करने को कहें कि वे बूढ़े दादा या दादी हैं। उनसे ऐसी कुछ सलाह सोचने को कहें जो वे अपने पोते–पोतियों को दे सकते हैं। आप एक उदाहरण दे सकते हैंः 'आपको कठिन परिश्रम करना चाहिए।'

3. बोर्ड पर सुझाव लिखें, उदाहरण के लिएः

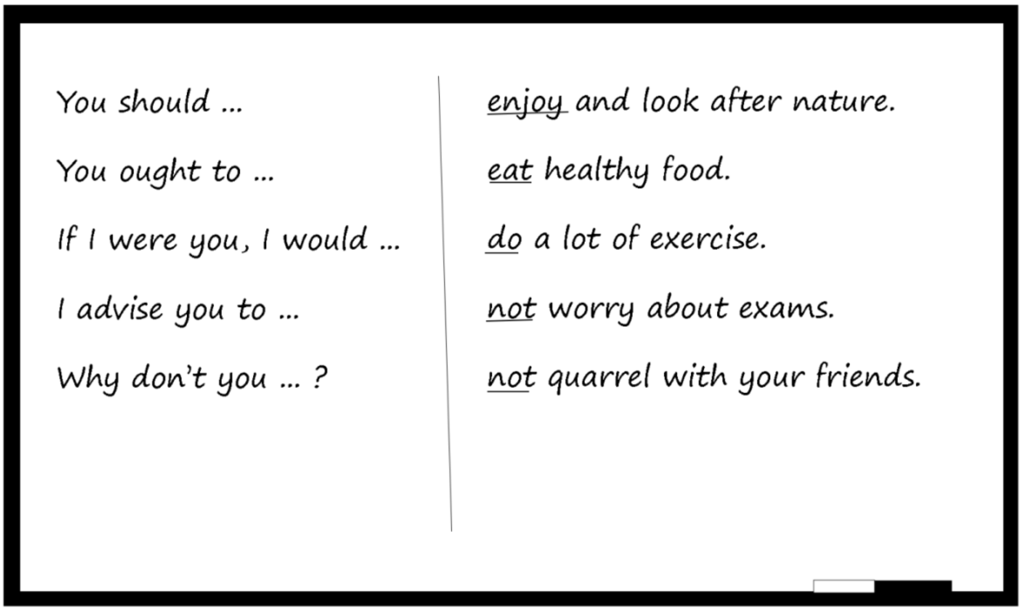

4. स्पष्ट करें कि छात्र किसी भी शुरूआत का उपयोग किसी भी अंत के साथ कर सकते हैं। Infinitive संज्ञा के उपयोग को स्पष्ट करें। वाक्यों को ऊँची आवाज में पढ़ें और छात्रों से उच्चारण को दोहराने के लिए कहें।
5. छात्रों को जोड़ियों में संगठित करें, और भूमिकाएं दें: एक छात्र दादा या दादी है; दूसरा पोता या पोती है। दादा या दादी की भूमिका निभाने वाले छात्र को दूसरे छात्र को सलाह देनी चाहिए।
6. कुछ मिनटों के बाद, छात्रों को भूमिकाओं की अदला–बदली करने को कहें।
7. छात्रों से स्वयं अपना 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र' शीर्षक वाला पत्र लिखने को कहें।

सुझाव: किसी पाठ के मूल अंश के बारे में बोलने और लिखने की गतिविधियाँ आपके छात्रों को उसमें प्रयुक्त भाषा का अभ्यास करने का अच्छा अवसर प्रदान करती हैं। यहाँ यदि आप चाहते हैं तो भाषा के सटीक उपयोग पर ध्यान दे सकते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ छात्रों को पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के प्रति अनुक्रिया करने, और उन्हें अपने जीवन के साथ संबंधित करने का अवसर भी देती हैं।

संसाधन 5: स्वयं अपनी अंग्रेज़ी का विकास करें

Here are some tips and links for developing your own reading skills:

- अंग्रेजी बोलने के कौशल का विकास करने के लिए आप जितना अधिक संभव हो अंग्रेजी पढ़ें जैसे अंग्रेजी के समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि। अपने साथियों व मित्रों के साथ अंग्रेजी पठन सामग्री को साझा करें। यदि संभव हो तो पुस्तकालय का प्रयोग करें।
- नियमित रूप से पढ़ें। पढ़ने के लिए ऐसा स्थान चुनें जहां कोई आपके पढ़ने में व्यवधान न डाले।
- इस इकाई में पढ़ी हुई तकनीकों का प्रयोग करें। पाठ के बारे में जानने के लिए चित्रों, शीर्षकों, उपशीर्षकों का प्रयोग करें।
- हर शब्द को समझने का प्रयास न करें। संदेश या मूल विचार को समझने का प्रयास करें। यदि संभव हो तो शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाएं, मुख्य शब्दों का पता लगाएं। याद रखें कि आप मूल पाठ को जितनी बार चाहें उतनी बार पढ़ सकते हैं।
- अन्ततः जो चीजें आपको आनन्द देती हैं, उन्हें पढ़ें। यदि कहानी पसंद हो तो उन्हें पढ़ें। समय बिताने के लिए आप क्रिकेट के समाचार भी पढ़ सकते हैं।

निम्नलिखित साधन आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं–

- Stories and poems for learners of English (with activities): http://learnenglish.britishcouncil.org/en/stories-poems
- Articles about many different topics for learners of English (with audio and activities): http://learnenglish.britishcouncil.org/en/magazine
- BBC news for Asia: http://www.bbc.co.uk/news/world/asia/

- *Times of India* online: http://timesofindia.indiatimes.com/

अतिरिक्त संसाधन

- 'How useful are comprehension questions?' by Mario Rinvolucri: http://www.teachingenglish.org.uk/article/how-useful-are-comprehension-questions
- A series of articles by Dave Willis about reading: http://www.teachingenglish.org.uk/articles/reading-information-motivating-learners-read-efficiently
- 'Theories of reading' by Shahin Vaezi: part 1, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading; part 2, http://www.teachingenglish.org.uk/articles/theories-reading-2
- 'What is reading?' by Adrian Tennant: http://www.onestopenglish.com/skills/reading/reading-matters/reading-matters-what-is-reading/154842.article
- 'Success in reading': http://orelt.col.org/module/3-success-reading

संदर्भ / संदर्भग्रंथ सूची

Gupta, S.P. (ed.) (2012) *English (A Textbook for Class X)*, revd edn (revised by K.D. Upadhyay). Noida: Banwari Lal Kaka & Sons (Publishers).

National Focus Group on Teaching of English © National Council of Educational Research and Training, 2006.

Nehru, J. (1949) 'Letter to the children of India', 3 December. Available from: http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2002-11-14/edit-page/27299288_1_grown-ups-eyes-and-ears-beautiful-world (accessed 29 July 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन–शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभारः

गतिविधि 1: पाठ्यपुस्तक *अंग्रेजी में बेन जॉनसन की 'द परफेक्ट लाइफ':* [Activity 1: 'The Perfect Life' by Ben Jonson, in the textbook *English:*] *कक्षा 10,* NCERT के लिए एक पाठ्यपुस्तक। [*A Textbook for Class X*, NCERT]

'यह इकाई किस बारे में है'/वृत्त अध्ययन 1: UPS कल्लि पश्चिम के अध्यापक। ['What this unit is about'/Case Study 1: teacher from UPS Kalli Paschim.] अनुमति प्रदान की गई। [Permission granted.] फोटोः [Photo:] किम ऐशमोर। [Kim Ashmore.]

संसाधन 1: नेहरू, जे. (1949) 'भारत के बच्चों के नाम एक पत्र', 3 दिसंबर। [Nehru, J. (1949) 'A letter to the children of India', 3 December.]

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और छात्रों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।